

पाठ 4 - आह्वान

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

व्यर्थ - बेकार, निरर्थक

आगे बढ़ना - पहल करना; विकास करना

ऊँचे चढ़ना - अपनी क्षमता बढ़ाना, तरक्की करना, प्रगति करना

भावना - इच्छा, कामना

पुरुषार्थ - कर्म

पौरुष - पाठ पढ़ना

आचरण करना - सीखे हुए पर अमल करना

ग्रास - निवाला, कौर, टुकड़ा

उद्यम - परिश्रम, मेहनत, प्रयास

पीछे पड़े - पिछड़ गए

कर्म-तेल - कर्मरूपी तेल

विधि-दीप - भाग्यरूपी दीपक

दैव - विधाता, भाग्य

साँचा - मूर्तियाँ बनाने का खाँचा या फर्मा

दोष मढ़ना - जिम्मेदार, ठहराना

देश बांधव - देश के नागरिक भाई-बहन

साधक - साधना या परिश्रम करने वाले

ऐक्य - एकता

विविध - अनेक प्रकार के